International Research Journal of Humanities, Language and Literature
Vol. 3, Issue 6, June 2016 IF- 3.558 ISSN: (2394-1642)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website: www.aarf.asia Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

रसोईघर की घड़ी

(Translation of "Die Küchenuhr" A story originally written in German)

Translated by: Prachi Singh

Faculty of German Amity School of Languages

Amity University Uttar Pradesh, Lucknow Campus

The Original Text

Die Küchenuhr

by: Wolfgang Borchert

Sie sahen ihn schon von weitem auf sich zukommen, denn er fiel auf. Er hatte ein ganz altes Gesicht, aber wie er ging, daran sah man, dass er erst zwanzig war. Er setzte sich mit seinem alten Gesicht zu ihnen auf die Bank. Und dann zeigte er ihnen, was er in der Hand trug. Das war unsere Küchenuhr, sagte er und sah sie alle der Reihe nach an, die auf der Bank in der Sonne saßen. Ja, ich habe sie noch gefunden. Sie ist übrig geblieben. Er hielt eine runde tellerweiße Küchenuhr vor sich hin und tupfte mit dem Finger die blau gemalten Zahlen ab. Sie hat weiter keinen Wert, meinte er entschuldigend, das weiß ich auch. Und sie ist auch nicht besonders schön. Sie ist nur wie ein Teller, so mit weißem Lack. Aber die blauen Zahlen sehen doch ganz hübsch aus, finde ich. Die Zeiger sind natürlich nur aus Blech. Und nun gehen sie auch nicht mehr. Nein. Innerlich ist sie kaputt, das steht fest. Aber sie sieht noch aus wie immer. Auch wenn sie jetzt nicht mehr geht.
Er machte mit der Fingerspitze einen vorsichtigen Kreis auf dem Rand der telleruhr entlang. Und er sagte leise: Und sie ist übrig geblieben.
Die auf der Bank in der Sonne saßen, sahen ihn nicht an. Einer sah auf seine Schuhe und die Frau sah in ihren Kinderwagen. Dann sagte jemand:
Sie haben wohl alles verloren?
Ja, ja, sagte er freudig, denken Sie, aber auch alles! Nur sie hier, sie ist übrig. Und er hob die

Uhr wieder hoch, als ob die anderen sie noch nicht kannten.
Aber sie geht doch nicht mehr, sagte die Frau.
Nein, nein, das nicht. Kaputt ist sie, das weiß ich wohl. Aber sonst ist sie doch noch ganz wie immer: weiß und blau. Und wieder zeigte er ihnen seine Uhr. Und was das Schönste ist, fuhr er aufgeregt fort, das habe ich Ihnen ja noch überhaupt nicht erzählt. Das Schönste kommt nämlich noch: Denken Sie mal, sie ist um halb drei Stehengeblieben. Ausgerechnet um halb drei, denken Sie mal.
Dann wurde Ihr Haus sicher um halb drei getroffen, sagte der Mann und schob wichtig die Unterlippe vor. Das habe ich schon oft gehört. Wenn die Bombe runtergeht, bleiben die Uhren stehen. Das kommt von dem Druck.
Er sah seine Uhr an und schütellte den Kopf. Nein, lieber Herr, nein, da irren Sie sich. das hat mit den Bomben nichts zu tun. Sie müssen nicht imer von den Bomben reden. Nein. Um halb drei war etwas ganz anderes, das wissen Sie nur nicht. Das ist nämlch der Witz, dass sie gerade um halb drei stehen geblieben ist. Und nicht um Viertel nach vier oder um sieben. Um halb drei kam ich nämlich immer nach Hause. Nachts, meine ich. Fast immer um halb drei. Das ist ja gerade der Witz.
Er sah die anderen an, aber sie hatten ihre Augen von ihm weggenommen. Er fand sie nicht. Da nickte er seiner Uhr zu: Dann hatte ich natürlich Hunger, nicht wahr? Und ich ging immer gleich in die Küche. Da war es dann fast immer halb drei. Und dann, dann kam nämlich meine Mutter. Ich konnte noch so leise die Tür aufmachen, sie hat hat mich immer gehört. Und wenn ich in der dunklen Küche etwas zu essen suchte, ging plötzlich das Licht an. Dann stand sie da in ihrer Wolljacke und mit einem roten Schal um. Und barfuß. Und dabei unsere Küche gekachelt. Und sie machte ihre Augen ganz klein, weil ihr das Licht so hell war. Denn sie hatte ja schon geschlafen. Es war ja Nacht.
So spät wieder, sagte sie dann. Mehr sagte sie nie. Nur: So spät wieder. Und dann machte sie mir das Abendbrot warm und sah zu, wie ich aß. Dabei scheuerte sie immer die Füße aneinander, weil die Kacheln so kalt waren. Schuhe zog sie nachts nie an. Und sie saß so lange bei mir, bis ich satt war. Und dann hörte ich sie noch die Teller wegsetzen, wenn ich in meinem Zimmer schon das Licht ausgemacht hatte. Jede Nacht war es so. Und meistens immer um halb drei. Das war ganz selbstverständlich, fand ich, dass sie mir nachts um halb drei in der Küche das Essen machte. Ich fand das ganz selbstverständlich. Sie tat das ja immer. Und sie hat nie mehr gesagt als: So spät wieder. Aber das sagte sie jedes Mal. Und ich dachte, das könnte nie aufhören. Es war mir so selbstverständlich. das alles war doch immer so gewesen.

Einen Atemzug lang war es still auf der Bank. Dann sagte er leise: Und jetzt? Er sah die anderen an. Aber er fand sie nicht. Da sagte er der Uhr leise ins weißblaue runde Gesicht: Jetzt, jetzt weiß ich, dass es das Paradies war. Das richtige Paradies. Auf der Bank war es ganz still. Dann fragte die Frau: Und Ihre Familie?
Er lächelte sie verlegen an: Ach, sie meinen meine Eltern? ja, die sind auch mit weg. Alles ist weg. Alles, stellen Sie sich vor. Alles weg.
Er lächelte verlegen von einem zum anderen. Aber sie sahen ihn nicht an. Da hob er wieder die Uhr hoch und lachte. Er lachte: Nur sie hier. Sie ist übrig. Und das Schönste ist ja, dass sie ausgerechnet um halb drei stehen geblieben ist. Ausgerechnet um halb drei. Dann sagte er nichts mehr. Aber er hatte ein ganz altes Gesicht. Und der Mann, der neben ihm saß, sah auf seine Schuhe. Aber er sah seine Schuhe nicht. Er dachte immerzu an das Wort Paradies...

Hindi Translation

By Prachi Singh

वो सब उसी को देख रहे थे क्यूंकि वो सबसे अलग दिख रहा था वो उनकी तरफ आ रहा है । उसके चेहरे से उसके उम्रदराज़ होने की शंका हो रही थी लेकिन उसके चलने के अंदाज़ से प्रतीत हुआ कि वो २० साल से अधिक का नहीं है। वो अपने बुज़ुर्ग चेहरे के साथ उनके सामने वाली बेंच पर बैठ जाता है और फिर सबको दिखता है कि उसने अपने हाँथ में क्या पकड़ा हुआ है।

जो लोग उसके साथ बेंच पर बैठ कर धुप ले रहे थे वो उन लोगों को एक एक कर के देखते हुए कहता है कि ये हमारे किचन की घड़ी है । आखिरकार मैंने इसे ढूंढ ही लिया। बस यही बची है। उसने एक गोल सफ़ेद रंग की किचन की घड़ी की प्लेट पकड़ी हुई है और वो अपनी ऊँगली से उसके नीले रंग के अंको की धूल हटा रहा है।

वो शर्मिंदगी महसूस करते हुए कहता है कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अब इसका कोई मूल्य नहीं है। और ये कोई इतनी ख़ास सुन्दर भी नहीं है। यह एक मामूली सी प्लेट है जिस पर सफ़ेद पॉलिश है ,लेकिन जो उसमे नीले रंग से संख्या अंकित है । मुझे वो बहुत सुन्दर लगती है। घड़ी की सुई स्टील से बनी हुई है और अब तो वो चलती भी नहीं है। नहीं। ये तो निश्चित है की ये अंदर से ख़राब है। लेकिन ये बिलकुल वैसी ही दिख रही है जैसी ये थी। भले ही ये चल न रही हो।

वो अपनी ऊँगली से घड़ी पर सावधानी से एक गोला बनाता है । और धीरे से कहता है सिर्फ यह ही बची है।

जो लोग धुप में उसके साथ बेंच पर बैठे है वो उसे अनदेखा कर रहे है। एक व्यक्ति अपने जूतों की तरफ देख रहा है और एक औरत अपनी बच्चे की बग्गी को देख रही है। तभी कोई ये कहता है । यह शायद सब कुछ खो चुका है ।

हाँ हाँ वो उत्साह से कहता है । लेकिन इन सब के बारे में सोच के देखिये! सिर्फ मेरे पास यह ही बची है। वो उस घड़ी को ऊँचा उठाता है मानो जैसे दूसरों को पता ही ना हो।

एक औरत कहती है लेकिन अब तो ये ख़राब हो चुकी है।

नहीं नहीं नहीं चलती। मुझे पता है ये ख़राब है। पर बाकी सब वैसा ही है जैसा हमेशा से था सफ़ेद और नीला। फिर वो अपनी घड़ी सबको दिखता है। वो उत्सुकता से आगे कहता है सबसे अच्छी चीज़ तो अभी बताई ही नहीं मैंने। सबसे अच्छी चीज़ के बारे में सोचिये और वो अच्छी चीज़ यह है की ये घड़ी सुबह के २-३० बजे रुकी है। ज़रा सोचिये ठीक २-३० बजे ।

फिर ज़रूर धमाका सुबह के २-३० बजे हुआ होगा एक आदमी ये कहता हुए अपना निचला होंट आगे की तरफ बढ़ाता है। यह मैंने बहुत बार सुना है जब धमाका होता है तो घड़िया रुक जाती है। यह विस्फोट के विकम्पन की वजह से होता है।

वो अपनी घड़ी की ओर देखता है और फिर उदासीनता से सिर हिलाता हुआ कहता है। नहीं प्यारे मित्र नहीं यहाँ आप गलत है। इसका बम से कुछ लेना देना नहीं है। आपको हमेशा बम की बातें नहीं करनी चाहिय। नहीं। २-३० बजे कुछ ऐसा होता था जिसके बारे में आप लोग नहीं जानते। यह एक मज़ाक है की ये ठीक २-३० बजे रुकी है। और न की सवा चार बजे या सात बजे। मैं हमेशा २-३० बजे घर आता था। मेरा मतलब है रात के। ज्यादातर २-३० बजे। हाँ ये एक मज़ाक सा है ।

वो औरों की तरफ देखता है लेकिन वे सब उससे अपनी नज़रें हटा लेते है। उससे वहाँ कोई नज़र नहीं मिलाता है। फिर वो अपनी घड़ी की तरफ देखता है तब मुझे सच में बहुत भूख लगी होती थी है ना और मैं आते ही सीधे रसोई में चला जाता था। तब हमेशा २-३० बज रहा होता था। और तब तब मेरी माँ वहाँ आती थी। मैं जितनी आहिस्ता से दरवाज़ा बंद कर सकता था उतनी आहिस्ता से बंद करता था पर फिर भी वो मुझे हर बार सुन लेती थी। और जब मैं अंदर किचन में कुछ खाने को ढूंढ़ता था तो लाइट जल जाती थी। वो हमेशा अपनी ऊनी जैकेट और गले में लाल रंग की शाल लपेटे खड़ी होती थी।नंगे पैर । किचन की जमीन पर टाइल्स लगे हुए थे। वो अपनी आँखे भींच लेती थी क्यूंकि किचन की रौशनी बहुत तेज़ होती थी और वो पहले ही एक नींद ले चुकी होती थी। यह सब रात की बाते है।

उसके बाद वो कहती थी फिर इतनी देर से। उसके आगे वो कभी कुछ नहीं कहती थी। फिर मेरे लिय वो रात का भोजन गरम करती थी और मुझे खाते हुए देखती थी। इस दौरान वो अपना एक पैर दूसरे पैर पर रगड़ती रहती थी क्यूंकि किचन का फर्श बहुत ठंडा होता था। रात में वो कभी जूते या चप्पल नहीं पहनती थी। वह वहां तब तक बैठी रहती थी जब तक मेरा पेट न भर जाए। जब मैं अपने कमरे की लाइट बंद कर चूका होता था तब भी मुझे आवाज़ आती थी की वो मेरी प्लेट वहां से हटा रही है। हर रात ऐसे ही होता था और अक्सर २-३० बजे। वो मेरे लिए देर रात २-३० बजे खाना बनाती थी और मेरे लिए एक आम बात थी। यह सच मे मेरे लिए एक मामूली सी बात थी। वो मेरे लिए ऐसा हमेशा से करती थी। और वो इससे ज्यादा कभी कुछ नहीं कहती थी की फिर इतनी देर से।लेकिन यह वो हर बार कहती थी। मुझे ये लगता था कि ये कभी खत्म नहीं होगा। ये मेरे लिए बहुत साधारण सी बात थी क्यूंकि ये हमेशा से ऐसे ही चलता आ रहा था।

एक पल को बेंच पर सन्नाटा छा गया था। फिर वो कोमलतापूर्वक कहता है और अब वो औरों की तरफ देखता है लेकिन कोई उससे नज़र नहीं मिलाता। तब वो अपनी नीली सफ़ेद गोल चेहरे वाली घड़ी की

तरफ देखते हुए धीरे से कहता है कि अब अब मैं समझता हूँ की वो स्वर्ग था। सचमुच का स्वर्ग। अभी भी बेंच पर सन्नाटा पसरा हुआ है । तभी एक औरत पूछती है और तुम्हारा परिवार!

वो उसको देख कर मुस्कुराया लेकिन उसके चेहरे पर अजीब सी शिकन थी अच्छा! अपका मतलब मेरे माता पिता से है । हाँ वो भी चले गए सब कुछ खत्म हो गया। सब कुछ। ज़रा सोचिये सब कुछ मतलब सब कुछ ।

वो एक एक कर के सबकी तरफ देख कर मुस्कुरा रहा था लेकिन वो लोग उससे नज़रे नहीं मिला पा रहे थे। वो फिर से अपनी घड़ी को ऊँचा उठता है और मुस्कुराता है। वो मुस्कुराता है सिर्फ ये ही है यहाँ। यह ही बची है।और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की ये २-३० बजे पर ही रुकी हुई है। ठीक २-३० बजे।

उसके बाद वो कुछ नहीं कहता। परन्तु उसका चेहरा बहुत कुछ बयां करता है । वो आदमी जो उसके बगल में बैठा है वो अपने जूतों को देख रहा है। पर सच तो ये है की वो अपने जूतों को नहीं देख रहा। वो शुरू से अच्छे समय के बारे में ही सोच रहा है।